Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 22

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

1 जून 2017 ई 5 रमज़ान 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

समस्त संसार का वही ख़ुदा है जिसने मुझे अपनी वाणी से गौरवान्वित किया, मेरे लिए अलौकिक निशान प्रकट किए, जिसने मुझे इस युग के लिए मसीह मौऊद बनाकर भेजा।

ख़ुदा एक प्यारा ख़ज़ाना है उस की कदर करो कि वह प्रत्येक कदम पर तुम्हारा मददगार है। तुम बिना उस के कुछ भी नहीं और न तुम्हारी चेष्ठाएं और कोशिशें कुछ चीज़ हैं

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

समस्त संसार का वही ख़ुदा है जिसने मुझे अपनी वाणी से गौरवान्वित किया, मेरे लिए अलौकिक निशान प्रकट किए, जिसने मुझे इस युग के लिए मसीह मौऊद बनाकर भेजा। धरती और आकाश में उसके अतिरिक्त कोई ख़ुदा नहीं । जो मनुष्य उसे स्वीकार नहीं करता और उस पर आस्था नहीं रखता वह सौभाग्य से वंचित और ज़िल्लत से ग्रसित है। हमने ख़ुदा की वाणी को सूर्य की भांति प्रकाशमान पाया । हमने उसे देखा कि संसार का वही ख़ुदा है उसके अतिरिक्त कोई नहीं । जिसे हमने पाया वह समस्त शक्तियों से परिपूर्ण, जीवित रहने वाला और जीवनदाता है । जिसे हमने देखा वह असीम और अनन्त शक्तियों वाला है । सत्य तो यह है कि उसके समक्ष कोई बात भी अनहोनी नहीं सिवाए इसके कि जो उसकी पुस्तक और उसके वायदे के विरुद्ध हो। अत: जब तुम ख़ुदा से प्रार्थना करो तो उन मूर्ख भौतिक वादियों की भांति न करो जो अपने ही विचार से प्रकृति का एक विधान बना बैठे हैं, जिस की ख़ुदा की पुस्तक द्वारा कोई पुष्टि नहीं, क्योंकि वे ख़ुदा से बहुत दूर हैं, उनकी प्रार्थनाएं कदापि स्वीकार न होंगी। वे अंधे हैं न कि सुझाखे, वे मुर्दे हैं न कि जीवित।

ख़ुदा के समक्ष अपना बनाया हुआ विधान प्रस्तुत करते हैं। और उसकी असीम और अनन्त शक्तियों को सीमित करते हैं, उसे निर्बल समझते हैं। अत: उनसे उनकी विचारधारा के अनुसार ही व्यवहार किया जाएगा। परन्तु हे मनुष्य जब तू दुआ के लिए खड़ा हो तो तुझ पर अनिवार्य है कि तू यह विश्वास रखे कि तेरा ख़ुदा प्रत्येक वस्तु पर पूर्ण अधिकार और शक्ति रखता है तब तेरी प्रार्थना स्वीकार होगी और तू ख़ुदा की अलौकिक शक्तियों के चमत्कार देखेगा, जो हमने देखे हैं। इस संदर्भ में हमारी साक्ष्य ख़ुदा के प्रत्यक्ष दर्शन करने पर आधारित है न कि कपोल कल्पित गाथाओं पर। उस मनुष्य की प्रार्थना कैसे स्वीकार हो सकती है जो बड़ी बड़ी विपत्तियों को प्रकृति के नियम के विरुद्ध समझता है। ऐसा मनुष्य ख़ुदा के समक्ष प्रार्थना हेतु खड़े होने का साहस कैसे कर सकता है जो ख़ुदा को प्रत्येक वस्तु पर पूर्ण अधिकार रखने वाला एवं सर्वशक्ति सम्पन्न नहीं समझता। पर हे सौभाग्यशाली मनुष्य ! तू ऐसा मत कर, तेरा ख़ुदा तो वह है जिसने अगणित नक्षत्रों को आकाश में बिना किसी स्तम्भ के लटका दिया, जिसने धरती और आकाश को कुछ न होते हुए उत्पन्न किया । क्या तू ऐसा विचार रखता है कि वह तेरे कार्य करने में असमर्थ रहेगा। तेरे ही विचार तुझे वंचित कर सकते हैं। हमारा ख़ुदा तो अगण्य चमत्कारों वाला है, पर वे ही देख पाते हैं जो पूर्ण सच्चाई और आस्था से उसी के हो गए हैं। वह ऐसे मनुष्यों पर अपने अलौकिक चमत्कार प्रदर्शित नहीं करता जो उसकी शक्तियों पर विश्वास नहीं करते और उसके सच्चे और परम भक्त नहीं। कितना दुर्भाग्यशाली है वह मनुष्य जिसे अंत तक यह ज्ञात नहीं कि उसका ख़ुदा है जो समस्त शक्तियों से परिपूर्ण है। हमारा स्वर्ग हमारा ख़ुदा है। हमारा परमानन्द हमारा ख़ुदा है क्योंकि हमने इसका अनुभव किया है। हर प्रकार का सौंदर्य उसमें विद्यमान है। यह धन लेने योग्य है यद्यपि कि जीवन देकर प्राप्त हो, यह रत्न ख़रीदने योग्य है यद्यपि समस्त अस्तित्व खोकर प्राप्त हो। हे वंचित रहने वालो ! इस झरने की ओर दौड़ो कि यह तुम्हें सींचेगा। यह जीवन दायी झरना है जो तुम्हें सुरक्षित रखेगा। मैं क्या करूं और किस प्रकार इस शुभ संदेश को हृदयों तक पहुंचाऊं, किस ढपली से मैं बाज़ारों में मुनादी करूं कि तुम्हारा ख़ुदा यह है ताकि लोग सुन लें, किस औषधि से मैं उपचार करूं ताकि लोगों के कान खुलें ।

यदि तुम ख़ुदा के हो जाओगे तो निसंदेह ख़ुदा तुम्हारा होगा । तुम सोए हुए होगे और ख़ुदा तुम्हारे लिए जागेगा, तुम शत्रु से बेख़बर होगे पर ख़ुदा उसे देखेगा और उसके प्रयत्नों को विफ़ल करेगा। तुम्हें अभी तक ज्ञात नहीं कि तुम्हारे ख़ुदा में कौन-कौन सी शक्तियां विद्यमान हैं। यदि तुम्हें ज्ञात होता तो तुम पर कोई दिन ऐसा न आता कि तुम संसार के लिए दुखी होते। एक मनुष्य जो अपने पास एक ख़ज़ाना रखता है क्या वह एक पैसे के व्यर्थ हो जाने से विलाप करता है, चीख़ें मारता है और मरने लगता है। यदि तुम को उस ख़ज़ाने की सूचना होती कि तुम्हारा ख़ुदा प्रत्येक आवश्यकता के अवसर पर काम आने वाला है, तो तुम सांसारिक वस्तुओं के लिए इतने आपे से बाहर न होते। ख़ुदा एक प्यारा ख़ज़ाना है उसकी क़द्र करो कि वह तुम्हारे प्रत्येक पग पर तुम्हारी सहायता करता है, उसके बिना तुम्हारा कोई अस्तित्व नहीं, तुम्हारे साधन, प्रयास और प्रयत्न महत्वहीन हैं। अन्य क़ौमों का अनुकरण मत करो जो पूर्णरूपेण सांसारिक साधनों पर निर्भर हैं। जैसे सांप मिट्टी खाता है इसी प्रकार वे संसार के क्षुद्र साधनों पर आश्रित हो गए, जैसे गिद्ध और कुत्ते मरे हुए जानवरों को खाते हैं। इन्होंने भी मुरदा जानवरों पर दांत मारे । वे ख़ुदा से बहुत दूर हो गए, उन्होंने मनुष्यों की उपासना की, सुअर खाया और मदिरा का पानी की भांति सेवन किया, भौतिक साधनों पर गिरे और ख़ुदा से शक्ति न मांगने के कारण वह मर गए। उनमें से आध्यात्मिकता इस प्रकार निकल गई जिस प्रकार घोंसले से पक्षी उड़ जाता है। उनके अन्दर सांसारिक साधनों की उपासना का एक कोढ़ है जिसने उनके सभी आंतरिक अवयवों को काट दिया है। अत: तुम उस कोढ़ से डरो। मैं तुम्हें सांसारिक साधनों से एक सीमा में रहते हुए लाभ उठाने से नहीं रोकता अपितु तुम्हें इस बात से रोकता हूं कि तुम अन्य क़ौमों की भांति इन भौतिक साधनों के दास बन जाओ और उस ख़ुदा को भुला दो जो उन साधनों को भी पैदा करता है। अगर तुम्हारे नेत्र हैं तो तुम्हें दिखाई दे जाए कि ख़ुदा के अतिरिक्त सब कुछ तुच्छ है। तुम उसकी आज्ञा के बिना अपने हाथों को न तो फैला सकते हो न समेट सकते हो । एक आध्यात्मिक मुर्दा इस बात की हंसी उड़ाएगा, यदि वह वास्तव में मर गया होता तो उसके लिए अति उत्तम था। सावधान ! तुम अन्य कौमों को देखकर उनका अनुकरण मत करो कि उन्होंने भौतिक लक्ष्यों की प्राप्ति में बहुत उन्नति कर ली है, इसलिए हम भी उन्हीं के पद चिन्हों पर चलें। सुनो और समझो कि वे उस ख़ुदा से लापरवाह और अपरिचित हैं, जो तुम्हें अपनी ओर बुलाता है। उनका ख़ुदा क्या है ? मात्र एक विवश इन्सान। इसलिए वे लापरवाही में पड़े हैं। मैं तुम्हें दुनिया कमाने और व्यापार आदि करने से नहीं रोकता, पर तुम उन लोगों के अधीन मत हो जिन्होंने संसार को ही सब कुछ समझ लिया है। तुम्हारे प्रत्येक कार्य में चाहे वह दुनिया का हो या दीन (धर्म) का उसको करने में ख़ुदा से हर समय सामर्थ्य मांगते रहो न केवल शुष्क होठों से बल्कि तुम्हारी सचमुच यह आस्था हो कि प्रत्येक भलाई आकाश से ही उतरती है ।

(कश्तू नूह, रूहानी खज़ायन,भाग 19, पृष्ठ 20 -23)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

☆ वास्तविक न्याय तब तक स्थापित नहीं हो सकता जब तक प्रत्येक अपने सारे निजी हितों को छोड़ने पर राज़ी न हो जाए। ☆ एक व्यक्ति जो बिना किसी पूर्वाग्रह के इस्लामी शिक्षाओं पर विचार करे तो देखेगा कि ये शिक्षाएं तो पूर्ण रूप से हर प्रकार के अन्याय, भेदभाव और बुराई के ख़िलाफ हैं।

☆एक मुसलमान पर फरज़ है कि वह अपने बड़े से बड़े दुश्मन के साथ न्याय के साथ कार्रवाई करे और उसकी दुश्मनी या ईर्ष्या उसे बदला लेने के लिए मजबूर न करे।

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लात तआला बेनसरहलि अज़ीज़ का 11 नवम्बर 2016 ई को पीस सिमपोज़ियम कैलगरी कनाडा में ऐतिहासिक ईमान वर्धक ख़िताब संबोधन (भाग-1)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने अपने संबोधन का आरम्भ बिस्मिल्लाह रहमान रहीम से फरमाया और समस्त मेहमानों को अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह व बरकातहो कहा।

इसके बाद **हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया:** पहले इस अवसर पर आप सबका धन्यवाद करता हूं कि आप लोग इस कार्यक्रम में शामिल हुए। कनाडा में हमारी जमाअत के अधिकारियों ने अनुरोध किया था कि दुनिया में शांति के माध्यमों और अपायों के संदर्भ में बात करूं। इसमें कोई संदेह नहीं कि प्रत्येक को इस बात का एहसास है कि दुनिया को इस समय शांति और सद्भाव की सख्त जरूरत है। दरअसल दुनिया इस बात को समझ तो रही है लेकिन लगता है कि शांति के लिए आवश्यक कदम उठाने के लिए तैयार नहीं। अमन प्राप्त करने के लिए बातें करना तो बहुत आसान है लेकिन वास्तव में उसके लिए जो कोशिशें की जा रही हैं वह न होने के बराबर, ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अफसोस की बात है कि दुनिया के अक्सर भागों में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष केवल दूसरों पर अपनी श्रेष्ठता साबित करने और अपनी शक्ति और सत्ता की वासना बुझाने को ही प्राथमिकता दी जा रही है। यह सुनकर आप में से कुछ कहेंगे कि एक मुसलमान रहनुमा दुनिया में शांति की स्थापना के संदर्भ में क्या कह सकता, जबकि इस समय दुनिया में मौजूद सारे फसाद और युद्ध के मरकज़ मुसलमान देश ख़ुद बने हुए हैं। इसमें कोई शक नहीं कि कुछ तथाकथित इस्लामी समूहों के बुरे कार्यों ने ग़ैर मुस्लिम दुनिया में डर और भय फैलाया हुआ है। पश्चिम के अंदर लोगों में इस्लाम से डर में लगातार वृद्धि हो रही है और वह इस्लाम को अपनी सभ्यता के लिए एक खतरा मानते हैं। इसलिए मैं समझ सकता हूँ कि आप में से कुछ इस बात को एक अजीब विरोधाभास विचार करते होंगे कि एक मुसलमान नेता दुनिया में शांति के हवाले से बात कर रहा है। लेकिन किसी भी प्रकार का निर्णय लेने से पहले आवश्यक है कि लोग इस्लाम की मूल शिक्षाओं से परिचित हों। किसी को यह नहीं समझना चाहिए कि आतंकवादियों और उग्रवादियों के कार्य इस्लाम से समनता रखते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जिस इस्लाम का मुझे ज्ञान हैं और जिस इस्लाम का मैं पालन करता हूं वह तो मुसलमानों की पवित्र पुस्तक कुरआन की शिक्षाओं और संस्थापक इस्लाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं और आप (स.अ.व.) के आदर्श पर आधारित है। अत: जो समय उपलब्ध है इसमें उन्हीं वास्तविक इस्लामी शिक्षाओं को आप के सामने रखूंगा ताकि आप एक बेहतर निर्णय कर सकें कि क्या इस्लाम चरमपंथ और फूट को बढ़ावा देता या इस्लाम एक ऐसा धर्म है जो समाज में सहिष्णुता और आपसी सम्मान को बढ़ावा देता ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: पहले तो शांति का एक सुनहरा नियम वर्णन करूंगा जिस का वर्णन सूर अन्नहल की आयत 91 में किया गया है जहां अल्लाह फ़रमाता है: " अल्लाह बेशक न्याय का और उपकार का और (रिशतेदारों से हट कर) निकटवर्ती (व्यक्ति) की तरह (जानने और इसी तरह मदद) देने का आदेश देता है। "

यह आयत मुसलमानों से मांग करती है कि वह प्रत्येक से एक अपने करीबी रिश्तेदारों जैसा व्यवहार करें। यह आयत इस बात की पाबन्दी करवाती है कि मुसलमान दूसरों से मुहब्बत करें और इसके पीछे किसी बदला की इच्छा न हो जैसा एक माँ अपने बच्चे को बेनफस हो कर प्यार करती है। फिर कुरआन करीम यह नहीं कहता कि मुसलमान सिर्फ दूसरे मुसलमानों के साथ ऐसा व्यवहार करें बल्कि कुरआन कहता है कि मुसलमान दूसरों से मुहब्बत और प्यार के साथ पेश आएं जिनमें सारे मुसलमान और ग़ैर मुस्लिम भी शामिल हैं। लेकिन इस के बावजूद आज जब हम कुछ मुस्लिम देशों की स्थिति देखते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि इस इस्लामी शिक्षा को पूर्ण रूप से उपेक्षा की गई है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: कई मुसलमान सरकारें अपने नागरिकों के अधिकार अदा करने में विफल हो गई हैं जिसकी वजह से जनता के अंदर बेचैनी बढ़ी जिसके प्रभाव बहुत गहरे और स्थायी हैं। इसके परिणाम में आतंकवादी और विद्रोही समूहों ने जन्म लिया और यह सब बहुत भयानक ज़ुल्म ढाने के दोषी हैं। पूर्वकाल के सफल राष्ट्र आज तबाह व बर्बाद हो गए हैं और बहुत दर्दनाक गृहयुद्ध में जकड़े जा चुके हैं। इस युद्ध का केवल एक ही कारण है कि मुसलमानों का बहुमत अपने धर्म की वास्तविक शिक्षाओं को भुला बैठा है और एक दूसरे के अधिकार अदा करने में विफल हो रहे हैं। अदल और न्याय का प्रदर्शन करने के बजाय उनके हर कर्म के पीछे शक्ति की वासना और लालच है। विडंबना यह है कि जिस तरह से यह चिन्ता जनता के अंदर फैल रही है उसका अंतिम परिणाम यही है कि शांति नष्ट हो रही है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इस्लाम न्याय के जिन मानकों को परिभाषित करता है उनके बारे में कुरआन करीम की सूर: निसा की आयत 136 में अल्लाह फ़रमाता है: " हे ईमानदारो! तुम पूरी तरह न्याय पर कायम रहने वाले (और) अल्लाह के लिए गवाही देने वाले बन जाओ। यद्यपि (तुम्हारी गवाही) तुम्हारे अपने (खिलाफ) या माता पिता या करीबी रिश्तेदारों के ख़िलाफ (पड़ती) हो। अगर वह (जिसके बारे में गवाही दी गई है) समृद्ध है या मोहताज है (दोनों मामलों में) अल्लाह इन दोनों का (तुम से) अधिक शुभचिंतक है। इसलिए तुम (किसी अपमानित) इच्छा का पालन न किया करो ताकि न्याय कर सको और अगर तुम (किसी शहादत को) छुपाओगे या (व्यक्त करने से) जी चुरोओगे तो (याद रखो कि) जो कुछ तुम करते हो अल्लाह इस को बेशक जानने वाला है। "

यह आयत इस तथ्य का वर्णन करती है कि इस्लामी शिक्षाए हरगिज़ क्रूर या अनुचित नहीं हैं बल्कि इस्लामी शिक्षाएं तो इंसाफ के अनुपमीय मानकों पर आधारित हैं। इसलिए अल्लाह कहता है सत्य की स्थापना के लिए एक व्यक्ति को अपने या अपने भाई-के ख़िलाफ भी गवाही देने के लिए तैयार रहना चाहिए। यह कहना तो बहुत आसान है कि मैं अपने ख़िलाफ भी बोलने के लिए तय्यार हूं लेकिन व्यवहार में इस स्तर के अनुसार जीना बहुत कठिन काम है। लेकिन इसके बावजूद ख़ुदा तआला ने मुसलमानों के सामने यह लक्ष्य और उद्देश्य रखा कि वास्तविक न्याय तब तक स्थापित नहीं हो सकता जब तक प्रत्येक अपने सारे निजी हितों को छोड़ने पर राज़ी न हो जाए। अगर इस अमूल्य सिद्धांत का पालन किया जाए तो यह न केवल मुस्लिम देशों बल्कि दुनिया के हर देश, हर शहर, हर कस्बे और हर गांव में शांति स्थापित करने का माध्यम होता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आमतौर यह आपत्ति की जाती है कि इस्लाम आतंकवाद को बढ़ावा देता है लेकिन इस प्रकार की सभी आपत्तियां केवल इस्लामी शिक्षाओं के विषय में कम ज्ञान और कम धारणा के आधार पर किए जाते हैं। एक व्यक्ति जो बिना किसी पूर्वाग्रह के इस्लामी शिक्षाओं पर विचार करे तो देखेगा कि ये शिक्षाएं तो पूर्ण रूप से हर प्रकार

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें बताया कि हर प्रकार का चरमपंथ, आतंकवाद और अत्याचार इस्लाम की शिक्षा के ख़िलाफ है।

अगर कुछ लोगों के कर्म या उनकी हरकतें इस्लाम के नाम पर दुनिया में फित्ना तथा फसाद पैदा करने की कोशिश करने वाली हैं तो यह इस शिक्षा के कारण नहीं जो अल्लाह तआला ने मुसलमानों को दी है बल्कि इस शिक्षा से दूर होने के कारण है और इस ज़माने में अल्लाह के भेजे हुए फरस्तादे और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम को न मानने की वजह से है।

जब इस शिक्षा की रोशनी में दुनिया को शांति भाईचारा सुलह और प्रेम का रास्ता दिखाते हैं अपने आप अक्सर शरीफ गैर मुस्लिम लोगों के मुंह से ये शब्द निकलते हैं कि इस्लाम की शिक्षा तो बड़ी सुंदर शिक्षा है। अतः इस बात की अभिव्यिक्ति मेरे जर्मनी के इस दौरे के दौरान भी विभिन्न फनगशनज़ में हुई जो मस्जिदों के उद्घाटन और शिलान्यास के अवसर पर थी।

जर्मन के दौरे के दौरान मस्जिदों के उद्घाटन तथा बुनियाद के आयोजनों में आने वाले मेहमानों में से कुछ की अभिव्यक्ति का वर्णन।

जर्मनी के इस दौरे के दौरान मस्जिदों के उद्घाटन और बुनियाद का व्यापक स्तर पर मीडिया कवरेज। रेडियो टी,वी अख़बारों तथा सोशल मीडिया के द्वारा एक अनुमान के अनुसार 39 मिलियन लोगों तक इस्लाम का सन्देश पहुंचा।

अल्लाह तआला के फज़्ल से यहां भी व्यापक रूप से इस्लाम की वास्तविक शिक्षा को फैलाने का काम हो रहा है और जमाअत का बहुत परिचय हुआ है यहां यू.के जमाअत के प्रोग्रामों के द्वारा सारी दुनिया में इस्लाम का सन्देश पहुंचा है।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 28 अप्रैल 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

जब भी मुझे दुनिया के प्रैस के प्रतिनिधियों या ग़ैर मुस्लिमों के साथ बैठने का मौका मिलता है, सवाल जवाब का या बातचीत का मौका मिलता है किसी न किसी तरीके से सीधे या परोक्ष वे यह सवाल ज़रूर करते हैं कि इस्लाम के बारे में दुनिया में जो डर है इस के क्या कारण है और यह कैसे दूर होगा? कुछ खुल कर और कुछ ढके छुपे शब्दों में कह देते हैं और कहना चाहते हैं कि शायद इस की वजह इस्लाम की शिक्षा है। अतः इस बार भी जर्मनी में एक पत्रकार ने यह सवाल किया कि जर्मनी में इस्लाम का डर बढ़ रहा है और फिर हमारे से सहानुभूति के रंग में यह भी कहा कि इस वजह से जो ग़ैर मुस्लिम हैं, यहां के स्थानीय लोग हैं वे भी मुसलमानों पर अत्याचार कर रहे हैं। वह पूछने लगी कि सवाल यह है कि आप की क्या प्रतिक्रिया है? इस पर आप क्या प्रतिक्रिया दिखाते हैं।? अतः यह कोई यही खास नहीं कई बार पहले भी यह सवाल हो चुका है और यही सवाल जो है हमारे तब्लीग़ के रास्ते खोलता है कि यह डर अगर बढ़ रहा है तो कुछ मुसलमान कहलाने वाले गिरोहों या व्यक्तियों का इस्लाम के नाम पर ग़लत हरकतें करने वाले और चरमपंथी हमले के कारण होता है और ग़ैर मुसलमानों की जो प्रतिक्रिया है या उनके विचार हैं वे भी ठीक हैं कि उनमें मुसलमानों के बारे में एक डर पैदा हो रहा है लेकिन हमारी प्रतिक्रिया कोई नकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं है। मैं तो हमेशा उन्हें यही बताता हूँ कि उलेमा या तथाकथित उलेमा के ग़लत प्रशिक्षण की वजह से और इस्लाम की वास्तविक शिक्षा को न समझने की वजह से ऐसे गिरोह और व्यक्ति उभर रहे हैं और यह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के ठीक अनुसार है। (सहीह बुख़ारी किताबुल इलम हदीस 100) और ऐसे समय में मसीह मौऊद और महदी मौऊद के आने की भविष्यवाणी है जिन्होंने इस्लाम की सही शिक्षा दुनिया में फैलानी थी और हमारे ईमान के अनुसार संस्थापक जमाअत अहमदिया वही मौऊद हैं जिन की भविष्यवाणी की गई थी। अतः हमारी प्रतिक्रिया तो उनकी शिक्षा के अनुसार है कि जो हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दी कि इस्लाम की शांति और सुरक्षा की शिक्षा को फैलाओ। इसलिए इसी शिक्षा प्रकाश में हम दुनिया में हर जगह काम कर रहे हैं। हाँ चरमपंथी समूहों की प्रक्रिया और उनके पश्चिमी देशों में भी ग़ैर मुस्लिम देशों में भी आतंकवादी हमलों की वजह से यहाँ इस्लाम शिक्षा संबंधित जो भय पैदा हो चुके हैं उन्हें दूर करने के लिए हमें अधिक मेहनत करनी होगी और इसके लिए हम कोशिश करते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें बताया कि हर प्रकार का चरमपंथ और आतंकवाद और अत्याचार इस्लाम की शिक्षा के ख़िलाफ है। आप अलैहिस्सलाम ने हमें बताया कि "जब से दुनिया पैदा हुई है सभी देशों के नेक लोग यह गवाही देते आए हैं कि ख़ुदा के चरित्र को अपनाना मानव अस्तित्व के लिए एक अमृत है।" अल्लाह तआला की जो नैतिकता हैं अल्लाह तआला के जो गुण हैं वह धारण करो तभी मानव जीवन का अस्तित्व है और फरमाया कि "मनुष्य की शारीरिक और आध्यात्मिक ज़िन्दगी इसी बात से जुड़ी हुई है कि वह ख़ुदा के सभी पवित्र आचरण का पालन करे जो सलामती का स्रोत हैं।" अतः अल्लाह तआला जो सलामती का स्रोत है वह एक मुसलमान से यही चाहता है और यही कुरआन का आदेश है कि उस के गुणों को अपनाया जाए उसके आचरण को अपनाया जाए।

आप फरमाते हैं कि "ख़ुदा तआला ने कुरआन शरीफ को पहले इसी आयत से शुरू किया जो सूरः फातिहा है कि اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ अर्थात समस्त पूर्ण और शुद्ध सिफतें ख़ुदा के लिए विशेष हैं जो सारे संसारों का रब्ब है।" फरमाया "आलम के शब्द में सभी विभिन्न जातियां, विभिन्न युग और विभिन्न देश सम्मिलित हैं।"

(पैग़ामे सुलह रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 23 पृष्ठ 440)

फिर आप फरमाते हैं।" अतः यह बात बिना किसी बहस के स्वीकार करने योग्य है कि वह सच्चा और पूर्ण ख़ुदा जिस पर ईमान लाना प्रत्येक बन्दा पर फर्ज़ है वह रब्बुल आलमीन है और उसका रब्ब होना किसी विशेष जाति तक सीमित नहीं है और न किसी विशेष समय तक और न किसी विशेष देश तक बल्कि वह सब जातियों का रब्ब है और सभी ज़मानों का रब्ब है और सभी मकानों का रब्ब है और

सभी देशों का वही ख़ुदा तआला है और सभी बरकतों का वही स्रोत है और प्रत्येक शारीरिक और आध्यात्मिक शक्ति उसी से ही है और इसी से सभी प्राणी पोषण पाते हैं और प्रत्येक अस्तित्व का वही सहारा है।

(पैग़ामे सुलह रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 23 पृष्ठ 442)

अत: यह है अल्लाह की विशेषता रब्बुलआलमीन का विवरण तथा व्याख्या। आप फरमाते हैं कि "अत: जबकि हमारे ख़ुदा के यह आदर्श हैं हमें उचित है कि हम भी उन्हीं आदर्श का पालन करें।"

(पैग़ामे सुलह रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 23 पृष्ठ 443)

अत: यही गुण यही नैतिकता एक वास्तविक मुसलमान को अपनाने चाहिए।

अत: यह है वह ज्ञान और अनुभूति जो कुरआन की शिक्षा से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें प्रदान किया और यही वह नुस्खा है जो दुनिया में शांति और सुरक्षा फैलाने के लिए आवश्यक है और यही वह बात है जो दुनिया में सुलह की नींव डाल सकती है और यही संदेश है जिसे जमाअत अहमदिया के आदमी दुनिया के हर कोने में पहुंचाने की कोशिश करते हैं और कोशिश करनी चाहिए।

अत: अगर कुछ लोगों के कर्म या उनकी हरकतें इस्लाम के नाम पर दुनिया में फित्ना तथा फसाद पैदा करने की कोशिश करने वाली हैं तो यह इस शिक्षा के कारण नहीं जो अल्लाह तआला ने मुसलमानों को दी है बल्कि इस शिक्षा से दूर होने के कारण है और इस ज़माने में अल्लाह के भेजे हुए फरस्तादे और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम को न मानने की वजह से है।

इसलिए हम जब इस शिक्षा की रोशनी में दुनिया को शांति भाईचारा सुलह और प्रेम का रास्ता दिखाते हैं तो अपने आप अक्सर शरीफ ग़ैर मुस्लिम लोगों के मुंह से ये शब्द निकलते हैं कि इस्लाम की शिक्षा तो बड़ी सुंदर शिक्षा है। अत: इस बात की अभिव्यिक्ति मेरे जर्मनी के इस दौरे के दौरान भी विभिन्न फनगशनज़ में हुई जो मस्जिदों के उद्घाटन और शिलान्यास के अवसर पर थी।

एक शहर वाल्डो शुट (Waldshut) है वहां एक मस्जिद के उद्घाटन समारोह में एक दूसरे शहर बासल (Basl) से आए हुए एक डॉक्टर साहिब थे। कहने लगे कि मुझे सारा जीवन इस बात की तलाश रही कि मुझे शांतिप्रिय मुसलमान कहीं मिल जाएं आज आप लोगों ने मेरी इस इच्छा को पूरा कर दिया। मैं अपने आप को बहुत भाग्यशाली महसूस कर रहा हूं कि आज मुझे ये लोग मिल गए हैं।

फिर वहाँ इटली से संबंध रखने वाली एक महिला भी आई हुई थीं। अपने दोस्त के साथ कार्यक्रम में शामिल हुईं। उसने बताया कि मेरा दोस्त इस कार्यक्रम में शामिल होने से घबरा रहा था क्योंकि इस्लाम के बारे में नकारात्मक भावनाएं थीं लेकिन कार्यक्रम में शामिल होने और इमाम जमाअत अहमदिया का ख़िताब सुनने के बाद इस्लाम के बारे में नज़रिया बिल्कुल बदल गया यहाँ तक कि उसने तुरंत अपने मोबाइल से अपने किसी दूसरे मुसलमान दोस्त को मैसेज किया कि आज मुझे पता लगा है कि आप का धर्म कितना सुंदर है।

फिर बोस्निया से संबंध रखने वाली तीन बड़ी शिक्षित महिलाएं इस समारोह में शामिल हुईं। उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज का कार्यक्रम मौजूदा कठिन परिस्थितियों में शांति की स्थापना के लिए एक मोमबत्ती की हैसियत रखता है और इमाम जमाअत अहमदिया का जो ख़िताब था उसमें आप ने मुहब्बत और पड़ोसियों के अधिकार अदा करने की ताकीद की ।

फिर एक मेहमान ने कहा "यहाँ आप की महफ़िल शए मुझे भी कुछ बरकतों को समेटने का मौका मिला और यहाँ आना मेरे लिए सम्मान की बात है। अगर आज मैं यहाँ न आता तो वास्तव में बहुत बड़ी बात से वंचित रह जाता। जमाअत अहमदिया द्वारा मुझे वास्तविक इस्लाम का परिचय मिला जो टीवी में घृणा और हिंसा वाले इस्लाम के विपरीत है और यहाँ से मुझे शांति और प्यार मिला है और केवल यह नहीं कि शाब्दिक रूप से शांति और प्यार मिला है बल्कि व्यावहारिक रूप में भी यहाँ ऐसे व्यक्ति मिले जो घृणा नहीं चाहते।" अत: हर अहमदी का जो निजी कर्म और प्रक्रिया है वह भी एक ख़ामोश तब्लीग़ कर रही होती है।

फिर एक मेहमान ने अपने विचारों को इन शब्दों में व्यक्त किया कि "आज तक मैं सोचता था कि हम एक ख़ुदा तआला को मानते हैं लेकिन विभिन्न धर्मों ने अलग रास्ते दिखाए हैं लेकिन आज यहां आकर पता चला है कि धर्म ने तो बड़े संयुक्त रास्ते बताए हैं और इमाम जमाअत अहमदिया ने इस बात को बड़ी खूबसूरती से वर्णन किया है।" कहने लगा मुझे यह बात पसंद आई कि उन्होंने बड़े स्पष्ट रूप से शेष हिंसक मुसलमानों और आई.एस आदि से दूरी व्यक्त की और हमें बताया कि उन का इस्लामी शिक्षा से कोई संबंध नहीं है और तथ्य यही है कि अल्लाह के नाम पर जो दु:खद कार्रवाई दुनिया में हो रही हैं इसमें आप लोगों का कोई दोष नहीं बल्कि उनका है जो शिक्षा को ग़लत बताते हैं।" फिर कहने लगे कि "हम सब का काम है कि प्यार और भाईचारा से उपद्रव के ख़िलाफ खड़े हों।" कहने लगे "मुझे आपकी यह बात भी बड़ी पसंद आई कि किसी व्यक्ति का ख़ुदा तआला में ईमान नहीं हो सकता अगर वह कत्ल करे क्योंकि एक दृष्टि से किसी मासूम को कत्ल करने का मतलब यह है कि ख़ुदा तआला पर ईमान को भी कत्ल किया जा रहा है।"

हमारे सुलझे हुए अहमदी बच्चे भी कैसे समाज पर अपना प्रभाव डाल रहे हैं। इसकी अभिव्यक्ति भी हमें नज़र आती है। अत: एक मेहमान महिला ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मैं शुक्रिया अदा करती हूं। मेरे बच्चों की अहमदी बच्चों से दोस्ती है। जब उनकी अहमदी बच्चों से दोस्ती है मैं उन्हें एक सकारात्मक और अच्छआ बदलाव देखा है। इसलिए मैं जानना चाहती थी कि आप की शिक्षा क्या है आज यहाँ आने के बाद मुझे पता चला कि मेरे बच्चे अच्छे दोस्तों के साथ हैं और सुरक्षित हैं।"

अत: यह ख़ामोश तब्लीग़ जो बच्चों की वजह से हो रही है यह अहमदी माता पिता पर और अधिक ज़िम्मेदारी डाल रही है कि अपने बच्चों के प्रशिक्षण की गुणवत्ता बढ़ाते रहें और उनके लिए दुआ भी करें ताकि हमेशा अहमदी बच्चे दूसरों पर अच्छा असर डालने वाले हों और समाज की बुराइयों से बचते रहें। यही अच्छा प्रभाव जो भविष्य में इंशा अल्लाह वास्तविक इस्लाम के संदेश को फैलाने में भूमिका अदा करेगी। वही बच्चे जब इन बच्चों के साथ खेलते हुए परवान चढ़ेंगे। अगर यह बच्चे अपनी हालतों को इस्लाम की शिक्षा के अनुसार ढाले रखेंगे तो इंशा अल्लाह इन्हीं बच्चों में से जो ग़ैर मुस्लिम बच्चे हैं कई अहमदियत में शामिल होने वाले होंगे।

इसी तरह Augsburg एक दूसरा शहर है जहां एक मस्जिद का उद्घाटन हुआ। बड़ा शहर होने के कारण यहां कई पढ़े लिखे लोग भी आए हुए थे। राजनेता भी आए हुए थे। एक मेहमान ने अपने विचार बताते हुए कहा कि यह बहुत ही सुन्दर संदेश है जो पहुंचाया जा रहा है। मेरी यह तमन्ना है कि आपका यह संदेश इस्लामी देशों के अक्सर लोगों तक पहुंचे। इस से शांति अधिक होगा। काश कि मुसलमान लोग भी मुस्लिम देश भी इस बात को समझने वाले हों कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सच्चा आशिक के द्वारा जो इस्लाम का पुनर्जागरण होना है उसमें उसके साथ शामिल होकर उनके समर्थक और सहायक बनें न कि रोकें खड़ी और मुखाल्फ़तें और दुश्मनियाँ पैदा करें।

एक जर्मन स्कूल टीचर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा। "अपने स्कूल के बच्चों को इस्लाम के बारे में इन सवालों के जवाब नहीं दे सकती थी क्योंकि मीडिया में जो कुछ आता था वह इस्लाम के तीव्र विरोधी होता था। आज इस कार्यक्रम में इमाम जमाअत अहमदिया के ख़िताब से मुझे इतनी अधिक सामग्री मिल गई है कि मैं अपने छात्रों को अब इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत करा सकती हूँ।"

फिर एक महिला ने कहा कि "आप के ख़लीफा की बातें सुनकर मेरे दिल पर गहरा असर हुआ है मैं नहीं जानती थी कि इस्लाम की शिक्षा इतनी हसीन और सुंदर है। ये बातें सुनकर मेरे दिल में सवाल उठता है कि इतनी सुन्दर शिक्षा के बावजूद इस्लाम इतना बदनाम क्यों हो गया है? मैं दुआ करती हूँ कि आप का इस्लाम फैले और सब लोगों तक पहुंचे।"

आगस बर्ग विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर कहते हैं कि "इमाम जमाअत अहमदिया ने जो कहा वह अगर वाकई आपका संदेश है तो आप को बहुत सफलता प्राप्त होगी।" बताने वाला लिखता है कि प्रोफेसर साहिब इतने प्रभावित हुए कि "उन्होंने विश्वविद्यालय में प्रदर्शन लगाने की पेशकश की और यह इच्छा व्यक्त की कि जमाअत सार्वजनिक रूप से सक्रिय हो और आपका संदेश प्रत्येक तक पहुंचे।"

एक मेहमान ने कहा कि(इमाम जमाअत अहमदिया ने) आज हमें दो विषय बताए हैं जिनकी आज हमें सबको बहुत ज़रूरत है और न केवल धार्मिक दृष्टि से बल्कि सांसारिक दृष्टि से भी समाधान बयान किए।" फिर(एक मेहमान) कहने लगे कि "यह बात भी बड़ी सही है कि अगर हम खुलकर और मिलजुल कर प्रेम और सहिष्णुता से रहेंगे तो शंकाए समाप्त हो जाएंगी।

और फिर एक और मेहमान ने कहा कि "मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ कि जहां दुनिया भर में इस्लाम के बारे में यही कहा जाता है कि वह घृणा की शिक्षा देता है यहां मुसलमान इसके विपरीत शांति के बारे में बातचीत कर रहे हैं।"

एक मेहमान ने कहा कि "संबोधन से इस बात ने मेरे दिल में बहुत गहरा असर कर गया है कि इस्लाम सहिष्णुता पर कितना ज़ोर देता है। मेरा इस जमाअत से पहला संपर्क था और बहुत अच्छी और आराम दायक बैठक थी इसलिए अब रुचि बढ़ गई

है और अब कोशिश करूँगा कि आप की मस्जिद में भी चक्कर लगाऊँ और इंटरनेट पर भी आप के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करूं।"

एक डॉक्टर महिला ने कहा कि "मुझे संबोधन ने बड़ा प्रभावित किया है दिल की गहराई तक असर करने वाला भाषण था। विशेषकर प्रेम और शांति का संदेश। अगर हम में से प्रत्येक अपने पड़ोसियों का विचार रखने वाला बन जाए जैसा कि इस्लामी शिक्षा है तो दुनिया कहीं अधिक सुन्दर हो जाए।"

फिर एक महिला ने कहा कि "पड़ोसियों के अधिकार ओर ध्यान दिलाया है विशेष रूप से बहुत अच्छा लगा। अगर हम इस संदेश के एक भाग पर भी पालन करने वाले हो जाएं तो दुनिया पहले से बहुत शांतिपूर्ण और सुखद हो जाए।"

पुलिस से संबंध रखने वाले एक तुर्क मेहमान ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि "आज की घटना और आप के संदेश से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। आप लोग इसी तरह इस्लाम का संदेश जगह जगह देते रहे तो जल्द ही बहुत सफलता पाएंगे।" फिर कहता है कि "पुलिस वाला हूँ और ऐसा व्यवस्थित प्रबंधन और कहीं देखने को नहीं मिलता मैंने आप की व्यवस्था से बहुत कुछ सीखा है।"

एक मेहमान रोन हाईम (Raunheim) में जहां मस्जिद की नींव रखी गई है वहाँ के मेहमान थे कहते हैं "हमें यहां आकर बहुत अपनापन महसूस हुआ है। मुझे ईसाइयों के भी कई कार्यक्रमों में शामिल होने का मौका मिला है लेकिन वहाँ ऐसा अपनापन महसूस नहीं हुआ।" अंत कहने लगा कि "ईसाई इस बारे में आप लोगों से बहुत कुछ सीख सकते हैं।"

अत: एक ईसाई का इस बात को स्वीकार करना कि ईसाइयों को आप से बहुत कुछ सीखना चाहिए और खासकर चरित्र, यह बहुत बड़ी बात है और हमारे युवाओं को अधिक विश्वास पैदा करना चाहिए इस बारे में किसी भी प्रकार की शर्म की ज़रूरत नहीं। अपने आप को छुपाने की ज़रूरत नहीं कि हम मुसलमान हैं बल्कि खुलकर इस्लाम की वास्तविक शिक्षा दुनिया को बताना चाहिए।

फिर एक मेहमान वहाँ रोन हाईम (Raunheim) में जहां मस्जिद की नींव रखी जा रही थी यह कहते हैं कि "ख़लीफा ने प्रभावी ढंग से दुनिया के हालात के बारे में हमें सूचित किया विशेष रूप से इस्लाम की शांतिपूर्ण शिक्षा को स्पष्ट रूप से सामने लाए।" एक मेहमान ने कहा कि "मैं पहली बार जमाअत के कार्यक्रम में आया हूं। मुझे लगता है कि जमाअत ने रॉन हाईम (Raunheim) में अपनी जगह बना ली है अब मुझे इंतज़ार है कि जल्द आप की मस्जिद बन जाए और उसे देखूँ। या तो मुखाल्फ़तें होती हैं या फिर जब संदेश पहुंचता है तो यह इंतज़ार करते हैं कि जल्दी मस्जिद बने।

एक मेहमान आए तो उनको शांति के बारे में और महिलाओं के अधिकारों के बारे में कुछ शंकाए थी और यह भी उनका सवाल था कि आप का ख़लीफा शांति के लिए क्या प्रयास करता है? और जब भाषण सुना तो कहने लगे कि "इन सब बातों को जो मेरे मन में थीं उनका ज़िक्र भाषण में कर दिया और मेरे सभी विचार दूर हो गए हैं और कहने लगे कि आप लोग तो शांति के राजदूत हैं सभी मुसलमानों को शिक्षा का पालन करना चाहिए"और फिर यह भी कहा कि "अब अपनी सीमा में जो भी मेरा क्षेत्र है इसमें आप का यह संदेश फैलाने में पूरी पूरी कोशिश करूँगा।"

एक सीरियन दोस्त अपनी अभिव्यक्ति प्रकट करते हुए कहा कि "मुझे इस बात का डर था कि ग़ैर मुस्लिम दोस्त यहां आकर ख़तरा पैदा न करें" और फिर कहने लगे कि "आप ने दूसरे मुसलमानों से बहुत बेहतर रंग में इस्लामी शिक्षाओं को प्रस्तुत किया है" और फिर यह कहने लगे कि "इमाम जमाअत अहमदिया ने आज मूल इस्लामी शिक्षा प्रस्तुत की। अहमदियों का यह पहला कार्यक्रम था जिसमें मैं शामिल हुआ हूँ अब मैं अधिक जानकारी प्राप्त करूंगा और शायद एक दिन में ख़ुद भी बैअत करके इस जमाअत में शामिल हो जाऊँ।" कहते हैं "यहां आने से पहले मैंने सुना था कि अहमदियों का कुरआन और है लेकिन आज यह बात भी मेरे सामने ग़लत साबित हो गई।"

एक मेहमान कहते हैं कि "एक अहमदी समारोह में शामिल होने का यह पहला मौका है इससे पहले जमाअत के बारे में अधिक पता नहीं था लेकिन अब मैं बहुत प्रभावित हूँ। मस्जिदों का अक्सर आतंकवाद से संबंध परिभाषित किया गया है लेकिन आज पता चला है कि यह तथ्य नहीं। मैं बहुत ख़ुश हूँ कि यहाँ पर एक मस्जिद बनने वाली है और यह मस्जिद शांति का गहवारा होगी।

एक महिला ने कहा कि "पहली बार जमाअत के किसी समारोह में शामिल हो रही हूँ। बहुत शांत वातावरण है और जो कुछ भी कहा गया है प्रेम और सहिष्णुता के बारे में शांति के बारे में है और मैं उनसे बहुत प्रभावित हुई।

मारबर्ग एक शहर है वहां मस्जिद का शिलान्यास किया गया। वहाँ समारोह में शामिल होने वाले एक मेहमान एक महिला ने कहा कि "पड़ोसियों के अधिकार से संबंधित संदेश ने मुझे बहुत प्रभावित किया है और एक ईसाई के रूप में मेरी इच्छा है कि ईसाई धर्म भी इस शिक्षा को प्राप्त करे।"

फिर एक और मेहमान ने कहा कि "महिलाओं का जो स्थान प्रस्तुत किया गया है आप के संबोधन में वह बेहद खूबसूरत धार्मिक शिक्षा है और आप के यहां पुरुष और स्त्री के स्थान और अधिकार में जो संतुलन है वह मुझे बहुत पसंद आया।"

लॉर्ड मेयर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि अफसोस इस बात का है कि मुसलमानों पर इतने अधिक ग़लत आरोप लगाए जाते हैं कि मुसलमानों को अपने जवाब में दलीलें देनी पड़ जाती हैं हालांकि अगर कोई पश्चिमी दुनिया का आदमी या ईसाई कोई क्रूर हरकत करे जैसे नॉर्वे में एक हत्यारा ने ईसाइयत के नाम पर कत्ल किए थे तो कोई नहीं कहता कि धर्म का दोष है।

एक मेहमान श्रीमती जूलिया (Julia) कहती हैं बहुत अच्छे तरीके से आयोजित होने वाले इस समारोह में भाषण का यह बिंदु भी मुझे बहुत अच्छा लगा कि अगर बन्दों के अधिकार अदा न किए जाएं तो ख़ुदा तआला की इबादत के क्या अर्थ हैं।" कहती हैं कि "मेरे यहां आने से पहले यही विचार था कि इस्लाम कट्टरपंथी उग्रवाद की शिक्षा देता होगा लेकिन आज की घटना ने मेरे मन को इस्लाम के बारे में नकारात्मक चिंता से मुक्त कर दिया है और इस्लाम की शांति और प्रेम शिक्षा अच्छा रंग में अवगत हुई हूँ।"

फिर एक महिला कहती हैं कि "आज के अंधेरे युग में यह संदेश आकाश पर एक चिराग़ की हैसियत रखता है मानवता के बारे में जब आप ने बात की तो मेरी आंखों में आंसू जारी हो गए।"

फिर मारबर्ग से ही एक साहिब कहते हैं कि "संबोधन कि इस हिस्से से बहुत प्रभावित हुआ हूँ जिस में इस्लाम की धार्मिक सहिष्णुता की शिक्षा बयान हुई है और किसी ऐसे धर्म को नहीं जानता जिस की ऐसी शिक्षा हो। दूसरे धर्म जो हैं इन में से प्रत्येक अपने धर्म तक ही सीमित है और अन्य धर्मों से संबंध बनाने की कोशिश नहीं।"

फिर मारबर्ग शहर की एक सरकारी कर्मचारी कहती हैं कि "बतौर ईसाई उनके लिए पड़ोसी के अधिकार जो इस्लाम की शिक्षा देती है बहुत महत्त्वपूर्ण हैं।"

फिर मेयर कार्यालय के एक कर्मचारी ने कहा कि "जो बातें सुनने के लिए आई थी इच्छा थी कि ये ये बातें हों वे सब आज बयान हो गईं।"

एक बड़ी आयु के मेहमान जो मेरे वहाँ पहुँचने से पहले कह रहे थे कि मेरी साढ़े छह बजे appointment है तो मैं चला जाऊँगा और जब कार्यक्रम शुरू हुआ तो हेडफोन लगा कर सुनते रहे। फिर मेरे भाषण के दौरान ही कहने लगे समय हो गया अब मैं जाने लगा हूँ और उठने लगे हेडफोन उतार कर फिर विचार आया तो फिर बैठ गए और सुनना शुरू कर दिया और पूरा भाषण सुनकर गए।

तो कई बार ऐसा भी होता है बल्कि अक्सर यही है कि हम तो थोड़ी कोशिश करते हैं अल्लाह तआला ज़बरदस्ती कुछ लोगों को संदेश सुनाना चाहता है और सुनाता है। बहुत सारे लोग ऐसे थे इस के कुछ उदाहरण प्रस्तुत करता हूँ।

फिनलैंड से संबंध रखने वाली एक महिला अपने नौ वर्षीय बेटे के साथ इस समारोह में शामिल हुईं। कहने लगीं कि "अपने छोटे बेटे को साथ लेकर आई हूँ। मेरी हार्दिक इच्छा है कि उसके कान में आप लोगों की भी आवाज़ पड़े और आप की प्रस्तुत की गई शिक्षाओं से कुछ सीख सके और आप लोगों जैसा ख़ुदा का पवित्र अस्तित्व बन सके।" फिर कहती हैं "संबोधन से बहुत प्रभावित हुई यही मेरे निकट सच्चा इस्लाम है और बाकी सभी मुसलमानों को उन्हीं के पीछे चलना चाहिए। खासकर सहिष्णुता और पड़ोसियों के अधिकार के बारे में जब इस्लामी दृष्टिकोण पेश किया गया तो मैं बहुत प्रभावित हुई। आप का यह संदेश, ये शिक्षाएं कभी ग़लत नहीं हो सकतीं।" फिर कहने लगीं कि "अब मेरी इच्छा है कि आप की जमाअत में से कोई इमाम या कोई व्यक्ति मेरे इस नौ वर्षीय बेटे को कुरआन पढ़ना सिखा दे। मैं चाहती हूँ कि यह कुरआन पढ़े और नेक प्रकृति बने।" अत: इस हद तक भी असर हो जाता है। अब क्या यह मानव का काम है बेशक अल्लाह तआला उनकी आदतों में यह परिवर्तन पैदा कर रहा है। अब यह हमारा काम है कि इससे लाभ लें और लोगों को ख़ुदा तआला के करीब करने की कोशिश करें। इसलिए इससे पहले हमें अपने आप को भी देखना होगा कि हम भी अल्लाह तआला की नज़दीकी पाने का अधिकतम प्रयास करें।

फिर एक महिला ने कहा पड़ोसी के बारे में इस्लाम की शिक्षा मुझे बड़ी अच्छी लगी। कहती हैं "काश हमारे यहां भी ऐसी शिक्षा होती।"

फिर एक और महिला यह कहती थीं वह कहती हैं कि "महिलाओं के अधिकारों को जिस तरह इमाम जमाअत ने वर्णित किया है वह बहुत अच्छा है बनिस्बत उन सभ्यताओं के जहां महिला के अधिकार छीने जाते हैं।"

तो अनगिनत ऐसी अभिव्यक्तियां थी कुछ एक मैंने बीच में से लिए

इसी तरह प्रेस में, मीडिया में इन चीजों की कवरेज भी बहुत हुई और मस्जिद बैतुल आफियत के उद्घाटन के अवसर पर एक टीवी चैनल और दो अख़बारों ने कवरेज की और बाईस जो टी चैनल है वह राष्ट्रीय टीवी चैनल है बैतुल आफियत के अवसर पर वहाँ कहते हैं कि उसे देखने वाले लोग और समाचार सुनने वाले विशेष रूप से उसके 22 लाख या 22 तेईस लाख लोग हैं।

इसी तरह मस्जिद बैतुन्नसीर अक्स बर्ग (Augsburg) के उद्घाटन के अवसर पर तीन टेलीविजन चैनल, चार रेडियो चैनल और अठारह अख़बारों ने कवरेज दी। यह बड़ा शहर है और कहा जाता है कि उनके रेडियो चैनलों और अख़बारों के द्वारा भी तीन करोड़ से ऊपर लोगों तक मस्जिद के उद्घाटन की ख़बर पहुंची और इस्लाम का संदेश पहुंचा ।

फिर जर्मनी के दो शहर रोन हायम और मारबर्ग में मस्जिदों के शिलान्यास रखे गए और यहां भी टीवी चैनल और 22 अख़बारों ने कवरेज दी और टीवी चैनल और अख़बारों के द्वारा इन मस्जिदों के शिलान्यास की ख़बर लगभग 2 करोड़ लोगों तक पहुंची।

मस्जिदों की समग्र मीडिया कवरेज जो विभिन्न टीवी और रेडियो चैनलों और अख़बार जिनकी संख्या 54 बनती है उन में 136 समाचार प्रकाशित हुए और मीडिया की इन खबरों के माध्यम से एक अनुमान के अनुसार 39 लाख लोगों तक संदेश पहुंचा।

अल्लाह तआला की कृपा से जर्मनी की जमाअत का तब्लीग़ का विभाग काफी सक्रिय है और दूसरे संगठन भी जो हैं वे भी पूरे साल काम करते हैं अच्छा काम कर रहे हैं और जो उनके जो संदेश सारा साल पहुंचते हैं वह भी अल्लाह तआला की कृपा से दस लाख में पहुंच रहे हैं इसकी वजह से वहाँ विरोध भी हो रहा है और खासकर पूर्वी जर्मनी में बढ़ रहा है, लेकिन हम ने तो इसके बावजूद अपना संदेश पहुँचाना है काम जारी रखना है। इंशा अल्लाह।

मैं जब दौरे पर जाता हूँ तो जिस देश में जाऊँ इस देश के कुछ हालात बयान कर देता हूँ लेकिन यहाँ यू.के में भी अल्लाह तआला की कृपा से काम हो रहा है और यहां क्योंकि विशेष रूप से कोई यात्रा नहीं होती इसलिए बयान भी नहीं किया इसलिए शायद कुछ को विचार हो कि शायद यहाँ काम नहीं होता जबकि यहां भी व्यापक रूप से इस्लाम की वास्तविक शिक्षा को फैलाने का काम हो रहा है। विभिन्न संगठन भी कर रहे हैं जमाअत का प्रचार विभाग कर रहा है अल्लाह तआला की कृपा और विशेष रूप से हज़रत मुस्लेह मौऊद की किताब" लाइफ ऑफ मुहम्मद" अंग्रेज़ी में जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत पर है यू.के में शायद सबसे अधिक बांटी गई है और लोगों तक पहुंची है तो अंसारुल्लाह ने बड़ा काम किया है इसी तरह दूसरी किताबें भी अल्लाह की कृपा से यहां बड़े बड़े पैमाने पर बांटी गई हैं और जमाअत का बड़ा परिचय हुआ है यहाँ के जो विभिन्न जमाअत के मुख्य फनगशनज़ हैं उनके द्वारा दुनिया में भी इस्लाम का परिचय होता है। इसलिए यहां के अहमदी यू. के के अहमदी बेशक बाकी दुनिया के कार्यक्रमों को या विकास को ईर्ष्या की नज़र से देखें लेकिन यह विचार न कि यहाँ कोई काम नहीं हो रहा। कुछ जो इन कार्यक्रमों में इतने अधिक शामिल नहीं होते उनका मानना होता शायद यहाँ हम बहुत पीछे हैं। नहीं अल्लाह की कृपा से यहां भी अच्छा काम हो रहा है। जैसे यह शान्ति सम्मेलन हुआ है जो पिछले महीने मार्च में इसमें भी बड़े व्यापक न केवल यू.के में बल्कि दुनिया में भी इस्लाम का संदेश पहुंचा है।

यहाँ उनकी भी कुछ अभिव्यक्ति मैं समझता हूँ कि बता देने चाहिए क्योंकि इसका ज़िक्र कभी नहीं किया गया।

एक चर्च वार्डन थीं वह यहां शान्ति संगोष्ठी में आई हुई थीं। कहती हैं बहुत ही रोचक और जबरदस्त संदेश था। एकता का संदेश था जिस की आज के समाज में ज़रूरत है। मुझे यह बात भी बहुत पसंद आई जो इमाम जमाअत ने कुरआन की एक आयत पेश करके समझाया कि विभिन्न धर्मों के अनुयायियों को आपस की साझा बातों पर सहमत होना चाहिए। यह ऐसी चीज़ है जिस पर अनुकरण संभव है और इसमें गैर धार्मिक लोगों को भी शामिल किया जा सकता है। मुझे आज इस्लाम और ईसाई धर्म में साझा बातों का ज्ञान हुआ है। इबादत का यह अर्थ भी मुझे बहुत पसंद आया कि पांच बार इबादत आवश्यक है लेकिन अगर साथ-साथ मानव सेवा नहीं तो इबादतों का कोई लाभ नहीं।"

फिर एक नर्स फयूनह साहिबा थीं कहती हैं कि "इमाम जमाअत ने दिखाया कि इस्लाम एक ऐसा धर्म है जिसे उचित रूप से समझा नहीं गया और आतंकवादी ग़लत रूप में इस्लाम के पीछे छुप रहे हैं। मुझे यह बात भी पसंद आई कि उन्होंने अपने भाषण की शुरुआत में लंदन में होने वाले आतंकवादी घटना की निंदा की और स्पष्ट किया कि इन हमलों का इस्लाम से कोई संबंध नहीं है। उन्होंने केवल सवाल ही नहीं उठाया बल्कि उनका समाधान भी पेश किया जैसे उन्होंने हथियारों की बिक्री का उल्लेख किया और यह भी बताया कि हमें एक दूसरे का सम्मान करते हुए एक दूसरे की बात सुननी चाहिए।"

फिर एक साहिब आए हुए थे कहते हैं कि "आज यह मालूम हुआ कि पिछले दिनों वेस्टमिंस्टर में आतंकवाद की जो घटना घटी उसका कारण इस्लाम नहीं बल्कि एक व्यक्ति का कसूर था जो एक शांतिपूर्ण धर्म के पीछे छुपता है। आज मुझ पर यह साबित हो गया कि वह आतंकवादी एक पागल आदमी था और वास्तविक मुसलमान नहीं था।" फिर कहते हैं कि "आप के ख़लीफा ने अपने चरम स्पष्ट रूप से बताया कि हर प्रकार का आतंकवाद ग़लत और कुरआनी आयतों द्वारा इस बात को साबित किया। मुझे यह बात भी अच्छी लगी जब उन्होंने कहा कि केवल आज पर नज़र नहीं रखनी चाहिए बल्कि कल को भी देखना चाहिए और यह भी कि हमें दीवारें नहीं बनानी चाहिए जो हमें विभाजित करें बल्कि पुल बनाने चाहिए।"

फिर एक जी.पी और चर्च के नेता भी हैं वह कहते हैं कि "भाषण मैंने सुना एक राह दिखाने वाले प्रकाश की तरह था जिसने दिखाया कि इस्लाम भव्य शांति का धर्म है।" फिर कहते हैं "बातचीत को बढ़ाने के बारे में संदेश बड़ा ज़बरदस्त था सही था दुश्मनियाँ बढ़ाने के बजाय हमें एक अलग विचार बात को सहन करना चाहिए और उन्होंने बिल्कुल ठीक कहा कि आज की दुनिया में धीरज कम होता जा रहा है।"

एक कंपनी के निदेशक साहिबा एक महिला यहाँ आई थीं कहती हैं एक बार आप लोगों के चौथे ख़लीफा से मिल चुकी हूं इसलिए आप की जमाअत के बारे में कुछ पता है और आज भी मिली और आज का आयोजन जब मैंने सुना इसकी आवश्यकता थी क्योंकि उन्होंने बताया कि प्रत्येक चीज़ का आरोप इस्लाम और मुसलमानों पर नहीं डालना चाहिए और यह कि आज की दुनिया में कई मुद्दे हमारे स्वयं बनाया गए हैं अर्थात पश्चिमी देशों के। हथियारों के व्यापार के बारे में भी ख़लीफा की बातें मुझे बहुत पसंद आईं। यह एक ऐसी चीज़ है जहां आकर हमारे आचार समाप्त हो जाते हैं और व्यापार के लाभ को प्राथमिकता दी जाती है। फिर कहती हैं "मुझे आशा है कि हमारी सरकार इस बात को नोट करेगी और दुनिया के भविष्य के बारे में जो इमाम जमाअत अहमदिया के शब्द और उनकी दुआ सुनकर मैं बहुत भावुक हो गई थी कि हम अपने पीछे एक अच्छी दुनिया छोड़ कर जाएं इसके साथ वह चिंतित थे कि कहीं हम अपने पीछे विकलांग बच्चों की दुनिया न छोड़ जाएं।"

यहां जमाअत को भी ध्यान दिला दूं कि आजकल दुनिया के हालात बहुत अधिक बिगड़ते चले जा रहे हैं और बहुत दुआ की ज़रूरत है। बड़ी शक्तियां भी और छोटे

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

देश भी युद्ध के जुनूनी हो रहे हैं। जो लोग पहले बड़े अच्छी समझ वाले नेता और राजनीतिज्ञ और विश्लेषक थे विश्व युद्ध को दूर की बात समझते थे वे भी अब कहने लग गए हैं कि इस की संभावना को अस्वीकार नहीं किया जा सकता बल्कि युद्ध की अधिक संभावना है और फिर युद्ध में जैसा कि अमेरिका और कोरियी का आजकल समस्या है यद्यपि चीन अब भूमिका निभा रहा है कि किसी तरह उनकी समस्या हल हो। ये लोग एक परमाणु युद्ध की धमकी दे रहे हैं। इसी तरह मुस्लिम नेता भी अत्याचार कर रहे हैं और यहाँ भी ब्लाक हो रहे हैं। युद्ध के मैदान बहरहाल विस्तृत हो रहे हैं अल्लाह तआला से दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला उन्हें बुद्धि दे और इसी तरह जो हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबि ने एक बार परमाणु युद्ध के मुकाबला करने के लिए एक नुस्खा भी होमियो पैथिक बताया था उसे भी जमाअत को चाहिए कि अब उपयोग कर ले कम से कम छह सप्ताह के लिए। एक बार एक दवाई कारसीनो चीन (Carcinosim) फिर दूसरी दवाई रीडईम बरमाइड। (Radioum Bromide) (उद्धरित होमियोपैथी अर्थात अद्वितीय इलाज पृष्ठ 703) इस की घोषणा हो जाएगी।

इसी तरह से एक और टिप्पणी भी प्रस्तुत कर दूं।

पुर्तगाल के एक प्रोफेसर डॉ पोलो मोरेयस (Paulo Morais) थे। कहते हैं कि "आज आप की बातें सुनकर साबित हो गया कि न्याय और शांति पर्याय शब्द हैं जिनका एक ही मतलब है और एक के बिना दूसरे का अधिग्रहण संभव नहीं।" कहते हैं "अत: दुनिया में न्याय की कमी है जिसकी वजह से शांति नहीं है और मुसलमानों को आतंकवाद और युद्ध के लिए ज़िम्मेदार करार नहीं दिया जा सकता, बल्कि हमें इसकी जड़ तक पहुँचना चाहिए कि दुनिया में न्याय की कमी है मुझे ख़ुशी है कि इमाम जमाअत ने इस्लामोफ़ोबिया पर बात की क्योंकि लोग इसे नज़र अंदाज कर रहे हैं लेकिन इसमें वृद्धि हो रही है और आप की यह बात भी सही है कि हमें आग पर पेट्रोल नहीं छिड़कना चाहिए और एक दूसरे का सम्मान करना चाहिए और मज़ाक नहीं करना चाहिए।"

इसी तरह पुर्तगाल के कैथोलिक विश्वविद्यालय के एक डॉक्टर प्रोफेसर कहते हैं कि "मुझे जो बात पसंद आई वह यह थी कि ख़लीफा के शब्द सबूत पर आधारित थे उन्होंने कुरआन के संदर्भ द्वारा दिखाया कि इस्लाम शांति का धर्म है और उन्होंने सांसारिक हवालों से भी बताया कि हर बुरी चीज़ का कारण इस्लाम को करार नहीं दिया जा सकता। मुझे यह बात भी अच्छी लगी कि हमें आज के साथ कल पर भी नज़र रखनी चाहिए।"

फिर एक राजनीतिज्ञ थे उन्होंने कहा कि संवेदना का संदेश दिल से था। फिर उनका यह कहना कि युद्ध सुनिश्चित दिख रहा है। कहते हैं कि मैं आशावादी हूँ कि कम से कम विश्व युद्ध को टाला जा सकता है जैसे हम पिछले सत्तर साल से कर रहे हैं हालांकि मैं इस बात से सहमत हूँ कि जब युद्ध शुरू हो जाए तो इसमें शामिल होने से बचना संभव नहीं हमें वैश्विक संबंध में न्याय स्थापित करने की ज़रूरत है जो संदेश यहां से मैं ले के जा रहा हूँ।

तो यह कुछ संदर्भ मैंने प्रस्तुत किए हैं वरना तो इस समारोह में भी लगभग 600 से ऊपर लोग आए हुए थे और सब की बड़ी अच्छी प्रितक्रियाएं थी। इस की मीडिया कवरेज भी काफी थी एसोसिएटेड प्रैस था। बी.बी.सी एशियन नेटवर्क , न्यू स्टेचस मैन(New Statesman) पत्रिका में NHK जापान के प्रसारण निगम है। संडे टाईम, ABC अर्जेंटीना कe मीडिया है। ERT टेलीविजन ग्रीस का है। 365 आइसलैंड का एक राष्ट्रीय समाचार पत्र है। साऊथ वेस्ट लेस्ट टेलीविजन, सपूतनक (Sputanik) अंतरराष्ट्रीय और बहुत सारा प्रेस था बीस इक्कीस के लगभग। इसके अतिरिक्त स्वतंत्र पत्रकार भी थे तो इसमें जो बाहर जो लोगों ने जा कर समाचार दिए हैं अन्य देशों के जो आए थे इसमें ऑस्ट्रिया का राष्ट्रीय टीवी था। आठ मिनट की उन्होंने रिपोर्ट दी। फिर यूनान का राष्ट्रीय टीवी था उन्होंने समाचार की रिपोर्ट दी। आइसलैंड के समाचार पत्र में छपा। इंडिया टुडे (India Today) टीवी रिपोर्ट थी। फिर इटली समाचार पत्र ने उसे प्रकाशित किया। अर्जेंटीना का राष्ट्रीय समाचार पत्र ने प्रकाशित किया। लेटिन अमेरिकन समाचार पत्र कनाडा ने प्रकाशित किया। स्पेन के दो अख़बारों ने किया इसी तरह पुर्तगाल ने भी प्रकाशित किया। अत: इस तरह लगभग 9 लाख से ऊपर यह संदेश भी यहाँ था जो बाहर के देशों में फैलाया गया। तो बड़े पैमाने पर यहां की शान्ति सम्मेलन का प्रचार होता है और इस संबंध में इस्लाम की शिक्षा का दुनिया को पता चलता है।

सोशल मीडिया के माध्यम से भी 3.8 लाख कवरेज हुई। लगभग दस ग्यारह के करीब बाहर के प्रतिनिधि थे।

जिस जिस तरह जमाअत का संदेश फैल रहा है हमारा विरोध भी बढ़ रहा है और विशेष रूप से मुस्लिम देशों में विरोध बढ़ रहा है। अल्जीरिया में पिछले कुछ महीनों से विशेष तौर पर बहुत अधिक विरोध है और यह बढ़ता चला जा रही है उनके बारे में दुआ के लिए भी कह चुका हूँ। अल्जीरिया में 24 तारीख़ को ही शायद एक उनकी संगोष्ठी थी। वहाँ के मंत्री औकाफ के एक पूर्व परामर्श देने वाले थे उन्होंने कहा कि जमाअत अहमदिया अपना रुख दे तो इस संगोष्ठी सभा में राष्ट्रपति को प्रस्तुत करूँगा। तो एक तो यह है कि उन्होंने पहले जमाअत के बारे में जानने के लिए सेमिनार आयोजित किया था लेकिन बाद में उन्होंने कह दिया कि नहीं हम ने जमाअत के बारे में जानना नहीं बल्कि यह फैसला कर लिया और जमाअत के ख़िलाफ ही भाषण होंगे और इसका शीर्षक यह रखा "क़ादियानियत एक ऐसा समुदाय जो ब्रिटिश की पैदावार है" वही पुराने घिसे-पिटे आरोप थे जो ये हम पर करते रहते हैं और जो हमारा रुख था न वह पढ़ कर सुनाया गया बल्कि रुख पेश करने वाले को कहा गया कि आप तो बड़े अक्लमंद इंसान थे पहले ख़िलाफ बोलते रहे जमाअत के अब क्यों पक्ष में बोल रहे हैं। तो बहरहाल जब उनकी प्रैस से बात हुई विदेशी प्रेस था तो उन्होंने कहा नहीं नहीं हम जमाअत अहमदिया को तो बड़ा अच्छा समझते हैं। वह तो मुसलमान हैं कोई उन पर अत्याचार नहीं हो रहा। केवल कुछ लोग जो देश के ख़िलाफ बातें करते हैं उनके ख़िलाफ हम ने कार्रवाई है लेकिन जब अपना प्रेस सामने आया तो वही बातें कि यह अहमदी मुसलमान नहीं हैं और साजिश करने वाले हैं और आई.एस के साथ मिले हुए हैं और अमुक अमुक अमुक। तो यह विरोध एक तरफ सल्फ़ियों के कारण बढ़ता चला जा रहा है और बहरहाल यह तो होना ही था और इस वजह से भी जो भी अल्जीरिया के समाचार हैं वहाँ के लोग यही कहते हैं कि प्रैस के कारण अल्जीरिया में भी जमाअत का परिचय बड़ा व्यापक रूप से हुआ है और कुछ लोग जमाअत के बारे में जानना चाहते हैं। तो जहां संदेश हम नहीं पहुंचा सकते थे वहाँ उनके विरोध ने पहुंचा दिया।

बहरहाल एक तरफ दुनिया इस्लाम के संदेश से प्रभावित हो रही है जो जमाअत अहमदिया फैला रही है और यह भी व्यक्त करते हैं कि ईसाईयों को भी उनसे सीखना चाहिए और दूसरी तरफ मुस्लिम देश जिनमें विरोध हो रहा है। अत: जैसा कि मैंने पहले भी कहा कि आजकल तीव्रता जो है अल्जीरिया में बहुत अधिक है। अल्जीरिया के अहमदियों के लिए भी दुआ करें फिर पाकिस्तान के अहमदियों के लिए दुआ करें फिर और दुनिया में जिन देशों में अहमदियत के ख़िलाफ और अधिक जोश उबल रहा है वहाँ के अहमदियों के भी लिए दुआ करें अल्लाह तआला उन सबको सुरक्षा में रखे और ख़ासकर अल्जीरिया के जो अहमदी हैं वे अधिक पुराने अहमदी नहीं, अल्लाह तआला उन्हें दृढ़ कदम रखे और उनकी परेशानियों को शीघ्र दूर भी करे।

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

لَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ
(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वे कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बंधित कर देते तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह और की जान की शिरा काट देते ।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे प्राय: उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित किया गया है। किताब प्राप्त करने के लिए इच्छुक पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit : www.alislam.org/urdu/library/57.html

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP -45/2017-2019 Vol. 2 Thursday 1 June 2017 Issue No. 22

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

पृष्ठ 2 का शेष

के अन्याय, भेदभाव और बुराई के ख़िलाफ हैं। इस्लाम तो समाज के हर स्तर पर शांति के आधार पर स्थापित करता है और इसमें विभिन्न जातियों के आपसी संबंध भी शामिल हैं। इसलिए कुरआन सूर: अलहुजरात आयत 10 में अल्लाह फरमाता है: "और अगर मोमिनों के दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें तो इन दोनों में सुलह करा दो। फिर अगर सुलह हो जाने के बाद उनमें से कोई एक दूसरे पर चढ़ाई करे तो सब मिलकर इस चढ़ाई करने वाले के खिलाफ युद्ध करो यहाँ तक वे अल्लाह के हुक्म की तरफ लौट आए। फिर यदि वे अल्लाह के हुक्म की तरफ लौट आए तो न्याय के साथ उनके (दोनों लड़ने वालों) में सुलह करा दो और न्याय को मद्देनज़र रखो अल्लाह न्याय करने वालों को पसंद करता है। "

इस आयत में अल्लाह ने बयान फ़रमाया कि अगर दो पक्ष या राष्ट्र किसी विवाद का शिकार हो जाएँ तो पड़ोसी देशों या सहयोगियों को सुलह करवाने की कोशिश करनी चाहिए। अगर आपसी बातचीत के द्वारा शांति न हो सके तो अन्य राष्ट्रों को इस पक्ष के ख़िलाफ एकजुट हो जाना चाहिए जो अन्याय का दोषी हो रहा और इसे रोकने के लिए शक्ति का उपयोग करना चाहिए। मैं व्यक्तिगत रूप से समझता हूं कि यह ज़बरदस्त कुरआनी सिद्धांत सिर्फ मुसलमानों के लिए ही महत्त्वपूर्ण नहीं बल्कि संयुक्त राष्ट्र और विश्व की अन्य बड़ी शक्तियां अगर इस नियम का पालन करें तो यह नियम दुनिया में स्थिरता और स्थायी अमन की स्थापना का एक अच्छा माध्यम साबित होगा। लेकिन इस तरीके के अनुसार न तो मुस्लिम देशों और न ही ग़ैर मुस्लिम देश शांति के लिए प्रयास कर रहे हैं। उदाहरण के रूप में पहले और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विवादों को सुलझाने के लिए मध्यस्थता का यह सिद्धांत अपनाया नहीं गया जिसके परिणाम में राष्ट्रों के बीच उत्पन्न होने वाले द्वेष अभी चल रहे हैं। अत: दुनिया को एकजुट करने और विरोधी समूहों की तरक्की को रोकने के लिए जो भी प्रयास किए गए वे सब व्यर्थ और असफल साबित हुए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जो कुछ मैं कह रहा हूं यह कोई नई या कोई ढकी छुपी बात नहीं बल्कि पिछले वर्षों में कई विश्लेषकों और स्तंभकारों ने उन संगठनों और मूल रूप से संयुक्त राष्ट्र कोखुले आम आलोचना बनाया है जिन्हें दुनिया में शांति और सुरक्षा स्थापित करने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। इन विश्लेषकों का कहना है कि यह संगठन मुख्य रूप से अन्याय की वजह से अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में विफल हो चुकी हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इसके अलावा समाज में शांति की स्थापना के संदर्भ में कुरआन की सूरत अलमाइदा की आयत 9 में वर्णित फ़रमाता है: "हे ईमानदारो! तुम न्याय के साथ गवाही देते हुए अल्लाह तआला के लिए खड़े हो जाओ, और किसी राष्ट्र की दुश्मनी तुम्हें हरगिज़ इस बात पर आमादा न कर दे कि तुम न्याय न करो। तुम न्याय करो, वह तक्वा के करीब है और अल्लाह का तक्वा धारण करो। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह इस को बेशक जानता है।"

यह आयत बताती है कि एक मुसलमान पर फरज़ है कि वह अपने बड़े से बड़े दुश्मन के साथ न्याय के साथ कार्रवाई करे और उसकी दुश्मनी या ईर्ष्या उसे बदला लेने के लिए मजबूर न करे। यह सुनकर आप में से शायद कुछ सवाल करेंगे कि अगर यही इस्लाम की शिक्षाएं हैं और अगर वास्तव में इस्लाम शांति और न्याय का धर्म है तो युद्ध और जंग और जिहाद के सिद्धांत मुसलमानों के साथ कैसे जुड़े गए हैं? इस सवाल के जवाब में फिर कुरआन के संदर्भ दूंगा। इतिहास इस तथ्य पर गवाह है कि इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप (स.अ.व.) के साथियों आप (स.अ.व.) के नबुव्वत के दावा के बाद तेरह साल तक मक्का में गंभीर उत्पीड़न और कष्टों का शिकार रहे। अंतत: उन्हें आराम के लिए मदीना की ओर हिजरत करनी पड़ी। लेकिन मक्का के काफिरों ने वहां भी उन्हें शांति के साथ रहने नहीं दिया और उनके पीछे मदीना तक चले आए और उन पर युद्ध थोप दिया। अल्लाह तआला ने केवल इन स्थितियों में पहली बार मुसलमानों को जवाबी कार्रवाई करने की अनुमति दी। रक्षात्मक युद्ध यह अनुमति सूर: अलहज्ज आयत 40 में इन शब्दों में दी गई "वह लोग जिनसे (बेवजह) युद्ध किया जा रहा है उन्हें भी (युद्ध की) अनुमति दी जाती है क्योंकि उन पर अत्याचार किया गया है और अल्लाह उनकी मदद करने में सक्षम है।"

इससे अगली आयत में अल्लाह तआला ने इस मामले पर अधिक प्रकाश डाला। इसलिए सूर: हज आयत 41 में कुरआन फरमाता है " (यह वह लोग हैं) जिन्हें उनके घरों से केवल उनके इतना कहने पर कि अल्लाह हमारा रब्ब है बिना किसी वैध कारण के निकाला गया और अगर अल्लाह (अर्थात कुफ़्फ़ार) में से कुछ को कुछ के माध्यम से (शरारत से) रोके न रखता तो गिरजे और यहूदियों के उपसाना स्थल और मस्जिदें जिस में अल्लाह तआला बार नाम लिया जाता है बर्बाद कर दिए जाते और अल्लाह बेशक उसकी मदद मिलेगी जो इस (धर्म) की मदद करेगा। अल्लाह वास्तव में बहुत शक्तिशाली (और) प्रमुख है।"

यह आयत बताती है कि मुसलमानों को रक्षात्मक युद्ध करने की अनुमति इसलिए नहीं दी गई कि उन्हें उत्पीड़न का सामना था बल्कि उन्हें सारी समाज की रक्षा और सभी लोगों के अधिकारों की रक्षा करने के लिए जवाबी युद्ध करने की अनुमति दी गई ताकि वे बिना किसी डर के खुलकर अपने विश्वास और धर्म को प्रकट कर सकें। यह उच्च इस्लामी शिक्षाओं का भव्य प्रकटन है कि क़ुरआन ने मुसलमानों को युद्ध करने की अनुमति इसलिए नहीं दी कि वह इस्लाम की रक्षा कर सकें या इस भय से दी गई कि सभी मस्जिदें नष्ट हो जाएंगी। लेकिन यह अनुमति सभी धर्मों और सभी उपासना स्थलों की सुरक्षा के लिए दी गई चाहे वह कलीसा हों, मंदिर हों, गिरजाघर हों, मस्जिदें हों या कोई उपसाना स्थल हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अत: उन प्रारंभिक मुसलमानों ने केवल आत्मरक्षा के लिए नहीं बल्कि मानवता, धार्मिक स्वतंत्रता और स्वतंत्र विवेक जैसी वैश्विक मूल्यों को ज़िंदा रखने के लिए अपनी जान को खतरे में डाला। मुसलमानों ने उन अत्याचारियों का हाथ थामने के लिए अपनी जानों को जोखिम में डाला जो दुनिया की शांति को नष्ट कर देना चाहते थे। इसी प्रकार यह कि इस्लामी इतिहास इस तथ्य पर गवाह है कि जहां भी यह रक्षात्मक युद्ध हुआ वहाँ रसूले करीम (स.अ.व.) ने युद्ध के बहुत सख्त नियम तैयार किए ताकि सुनिश्चित बनाया जाए कि मुसलमान सेना किसी प्रकार के अत्याचार न करें। आप ने विशेष रूप से फ़रमाया चर्च, गिरजाघर, मंदिर और अन्य इबादतगाहों को कभी निशाना न बनाया जाए। उसी तरह मुसलमानों को आदेश दिया गया कि वे पादरियों, बिर्यों और अन्य धार्मिक नेताओं को निशाना न बनाएं। न ही महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों को नुकसान पहुंचा और न ही फसलों और वृक्षों को नष्ट किया। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि रसूले करीम (स.अ.व.) और आप (स.अ.व.) के चारों खलीफा और बाद में आने वाले ऐसे मुसलमान शासक जिन्होंने इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं का अनुसरण उन्होंने हमेशा धार्मिक बिादतगाहों और सभी धर्मों की पवित्रता का सम्मान किया और उनकी सुरक्षा की।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: दरअसल इन सिद्धांतों का पालन करना सभी मुसलमानों का कर्तव्य है क्योंकि कुरआन सूर: अल्बक़रा आयत 191 में फरमाता है "और अल्लाह के रास्ते में उन लोगों से युद्ध करो जो तुम से युद्ध करते हैं और (किसी परभी) ज़्यादती न करो (और याद रखो कि) अल्लाह तआला दुरुपयोग करने वालों से हरगिज़ प्यार नहीं करता। "

यह बहुत स्पष्ट और महत्त्वपूर्ण आदेश इस्लामी युद्ध के लिए कुछ शर्तें लगाता है। यह आयत मांग करती है कि मुसलमानों को हरगिज़ स्वत: युद्ध थोपना नहीं चाहिए या फिर किसी प्रकार आक्रामक कदम नहीं उठाना चाहिए। इसलिए जो लोग यह कहते हैं कि इस्लाम आतंकवाद या क्रूर जिहाद की अनुमति देता वह सरासर गुमराही का शिकार हैं।

(शेष.....)**(अनुवादक शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)**

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad